OM-21 - 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 27/01/2021 4:29 PM Page 2

दुत्कारें नहीं... दया करें

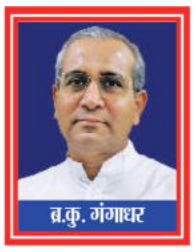

हम जिस महानतम धर्म की पुनर्स्थापना में लगे हुए हैं, यदि परमपिता परमात्मा के गुण, कर्म और स्वभाव को धारण नहीं करेंगे तो धर्म की स्थापना कैसे होगी! हम अपनी दिनचर्या में भी यदि और किसी प्रकार का चार्ट नहीं भी रख सकते तो कम से कम ये चार्ट तो रखें कि हमने कितनों को सुख दिया, संतुष्ट किया और सांत्वना दी। क्या हमने किसी पर किसी भी प्रकार से गुप्त दया की? हमने किसी को दुःख, वेदना, पीड़ा या पछाड़ तो नहीं दी? यदि दी, तो हमपर मार पड़ेगी। भगवान ने कह दिया है कि दुःख दोगे तो दुःखी होकर मरोगे। क्या विश्व के इतिहास में ऐसा कोई व्यक्ति हुआ है जिसने निर्दयता से व्यवहार किया हो और उसपर ऊपर वाले की दया हुई हो? 'परमात्मा की दया के बिना तो हम डूब जायेंगे, हमें तारेगा कौन और पार उतारेगा कौन? अतः मंत्र यह है कि 'कर दया तो होगी तुझपर दया।'

दया का एक रूप क्षमा है। किसी से कोई छोटी-छोटी भूल हो गई हों तो उसे समझा कर सावधान कर दो। भविष्य के लिए चेतावनी दे दो या आँख दिखा दो या बड़ी भूल हुई हो तो उससे बोल-चाल, लेन-देन, आना-जाना कम कर दो या बंद कर दो परंतु उससे दुश्मनी करना, उसे नीचा दिखाना, उसे पीड़ित करना तो अपने लिए शूली तैयार करना अथवा फांसी का रास्ता बनाना है। क्षमा करने से अपना ही मन हल्का होगा, दूसरे को भी निकट आने का साहस होगा और तीसरे के पास भी रिपोर्ट(शिकायत) नहीं जायेगी। क्षमा करना तो बड़प्पन है, वीरता है। किसी आत्मा के उद्धार की एक विधि है। सरकार ने भी कई डाकुओं को क्षमा देकर लूट-मार के धन्धे-डण्डे से छुड़ाया था। क्योंकि वे डाकू ही अब उन काले कारनामों को छोड़ना चाहते थे।

दया का भाव यह नहीं है कि कोई व्यक्ति बार-बार पाप, अपराध करता रहे और हम क्षमा करते रहें। परिणामस्वरूप वह अनेकों को कष्ट पहुंचाता रहेगा। ऐसे व्यक्ति पर तो रोक लगानी पड़ती है अथवा उसे एहसास कराने के लिए विधि-विधान के अनुसार दंडित भी करना पड़ता है। परंतु इन सबके पीछे भी भाव दया ही का रहना चाहिए। अर्थात् यह भाव होना चाहिए कि वह पाप कर्म न करे और उनका कल्याण हो।

जिसके हाथ में कुछ अधिकार है, जो ऊँची कुर्सी पर बैठा है या सत्ता पर डण्डा लिये हुए है, वह अभिमान के कारण आतंक मचाता है, धमकियां देता है या निर्दोष पर भी दोष लगाकर उसे दंडित करता है व कमज़ोर पर अत्याचार करता है, दबाव डालकर पैसा ऐंठता है, हकीम समझकर हुकूमत चलाता है या हांककर पशुओं की तरह चलाता है। उसे यह मालूम नहीं पड़ता कि दूसरों को सताकर, उनके आँसू के आहों को निकालकर अपने लिए आफत ला रहा है। उस बुद्धिभ्रष्ट व्यक्ति का विवेक नष्ट हो जाता है। वह पुलिस अधिकारी होकर सुरक्षा या राहत देने की बजाय निरपराध को डण्डा मारता है और फटकारता है या जेल में डालता है। लाइसेंस देखने के बहाने चालान करने की धमकी देकर रोब से पैसा मांगता है। यदि वह प्रशासनाधिकारी है तो तरक्की रोक लेता है। गलत रिपोर्ट देकर हानि पहुंचाता है और काम पर काम लेते जाने के बाद भी सुस्त बताता है। यदि वह राजनीतिक नेता है तो वो अपनी शक्ति का दुरुपयोग करते हुए या तो झांसा देता है या अपना अनुचर बनाता है तथा वोट और नोट मांगता है। इस प्रकार हरेक शक्तिशाली तथा अधिकार युक्त व्यक्ति दबदबा दिखाकर परेशान करता है। यहाँ तक कि आश्रम का अधिकारी अथवा स्वामी भी अपनी सत्ता, सिद्धि, स्थानों या साधनों के बलबूते पर अनेकानेकों के दिल दुःखाता है और अदला-बदली करके खलबली मचाकर या चालाकी चलकर बहुत जनों को दुःखी या परेशान करता है और डण्डा मारकर पशुओं की तरह चलाता अथवा काम लेता है। यही तो धर्म-ग्लानि है। यदि धर्म के ठेकेदार ही निर्दयी बन जायें और कमज़ोरों तथा अधिनस्थ लोगों की रूह को राहत देने की बजाय उन्हें आहत करें तो गोया वे विपरीत-बुद्धि, ईश्वर-विमुख हैं। वह दूसरों को वंचित कर अपना भरण-पोषण करने वाले हैं। वे भगवान का नाम लेते परंतु भगवान से नहीं डरते। दूसरों के दिल से जो हाय-हाय निकलती है, उस हाय रूपी अंदर की अग्नि में भस्मीभूत होने का निमंत्रण स्वीकार करते हैं। अतः हे मनुष्य, तू कुछ तो डर, दया कर तो दया का पात्र बनेगा। नेकी कर दरिया में डाल। दया से ही धर्म के वृक्ष का मूल उगेगा। हे मानव, तू दुत्कार न दे, दया किया कर, प्यार तू दे दिया कर। क्षमाशील बन, भगवान को देख, मत सता, न दुःखा, स्वयं को देख। कुछ रहम कर..., कुछ रहम कर, वहम न कर, लोग आहें भरेंगे तू ऐसा अहम न कर। हे मनुष्य, अपना चार्ट रख, दयावान बन, दुआओं के पात्र बन न कि दुःख देकर बद्दुआयें ले। सिर्फ दया करने लग जा तो दया के सागर आपको सद्बुद्धि देकर पुण्य का कर्म ही करायेंगे। बीती सो बीती कर अब जाग जा। जीवन बहुत छोटा भी है और अमूल्य भी।

अलौकिक पालना का अनुभव

चाहे सतयुग में लक्ष्मी-नारायण का राज्य होगा लेकिन लक्ष्मी नारायण का बच्चा और संगमयुग पर हम भगवान के बच्चों ने जो अनुभव किया है, वो सारे कल्प में और कोई करा नहीं सकता है।

लोग कहते हैं सबके अन्दर परमात्मा समाया हुआ है, लेकिन हम कहते हैं कि हम सबके दिल में बापदादा की याद समाई हुई है। हम उनके बच्चे हैं वो हमारा बाबा है। आप सभी ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी तो बन गये हैं ना! लेकिन आपने ब्रह्मा बाबा को देखा है? क्या जवाब देंगे? डबल फॉरेनर्स ने कहा कि हाँ आपसे भी ज़्यादा देखा है। हमने कहा आपने कैसे देखा है? तो बोले अनुभव की आंख से ब्रह्मा बाबा और शिवबाबा दोनों को देखा है। और यह सच है कि आंखों से देखी हुई चीज़ तो फिर भी थोड़ा कुछ ऊपर-नीचे अथवा मिसअंडरस्टैंडिंग हो सकती है। लेकिन अनुभव की हुई चीज़ को कोई कितना भी बदलने की कोशिश करे, हम बदल नहीं सकते। जैसे चीनी को आपने चखके देख लिया कि यह मीठी होती है। अगर आपको सारे विश्व की आत्मायें भी कहें कि नहीं, चीनी मीठी नहीं होती है, खट्टी या नमकीन होती है तो आप मानेंगे? नहीं ना! क्योंकि चीनी को सिर्फ देखा ही नहीं, बल्कि चखके उसके स्वीटनेस का अनुभव किया है। तो हम सभी ने जो अव्यक्त बाबा से जन्म लिया है, उन सबने भी अनुभव के आधार से तो बाबा को देखा, जाना है ना! इसीलिए हमारा दिल कहता है "मेरा-मेरा कहते ही हमारे इस नयेजन्म का सौदा भगवान से हो गया क्योंकि मेरा माना उसपर पूरा अधिकार होता है। तो सिर्फ कहने की रीति से नहीं, दिल से अगर कहते हैं मेरा बाबा तो हम अधिकारी बन ही गये। जो बाबा का वो मेरा और जो मेरा वो बाबा का। ऐसे नहीं बाबा का तो मेरा है लेकिन मेरा बाबा का नहीं, तो उसको बाबा बच्चा नहीं मानते हैं इसलिए जो मेरा सो बाबा का और बाबा का सो मेरा इसको कहा जाता है सच्चा-सच्चा ब्रह्माकुमार या ब्रह्माकुमारी। तो आप सबने ऐसा सौदा किया है ना भगवान से? दिल से कहा है ना, मेरा बाबा? इसलिए हम ऐसे नहीं कहेंगे कि हमारा ब्रह्माबाबा ऐसा था, नहीं कहेंगे। सचमुच अगर भगवान को बाबा कहा जाता है तो हमने प्रैक्टिकल जीवन में साकार रूप में ब्रह्मा बाबा को और ब्रह्मा बाबा द्वारा शिवबाबा को अनुभव किया है। हमारा दिल तो यही कहता है कि सारे कल्प में ऐसा बाबा मिल नहीं सकता। चाहे सतयुग में लक्ष्मी-नारायण का राज्य होगा लेकिन लक्ष्मी नारायण का बच्चा और संगमयुग पर हम भगवान के बच्चों ने जो अनुभव किया है, वो सारे कल्प में और कोई करा नहीं सकता।

संकल्पों पर आधारित हमारी खुशी

जितना अभी तन से करो उतना तंदुरुस्त बनेंगे। फालतू सोचने से भी सिरदर्द होता है। सोचने से दर्द आ जाता है। हेल्दी बनना हो तो फालतू मत सोचो।

बाबा कहते बच्चे तुरंत दान महापुण्य के महत्व को समझ खुश रहो। तुरंत दान अर्थात् जो संकल्प आये कर लो, कल किसने देखा है। दान यथाशक्ति दिया जाता, पुण्य जितना चाहे करो। समय पर हमदर्दी से किसको मदद करो तो उसके दिल से दुआ निकलेगी। दान किया तो कुछ न कुछ जमा किया, बीज बोया। बाबा के यज्ञ में कभी यह शब्द नहीं आता कि डोनेशन लेते हैं। यज्ञ सेवा अर्थ बीज बो रहे हैं, यह कर्म की खेती है, सत्य धर्म की स्थापना का कार्य है। इसका फल न केवल मुझे मिलेगा बल्कि अन्य भी खायेंगे। जितना जो तन-मन-धन सफल करता है उतना खुशी में रहता है। मात-पिता भी हमें खुशी में नाचता हुआ देख खुश होते हैं। दुनिया की आत्मायें जो हमें नहीं जानती वह भी सोचती हैं- यह इतना खुश कैसे रहते हैं। बाबा को दिल से याद करने वाले को खुशी होती है क्योंकि वह विजयी बनता जाता है। उसका मन, कर्मेन्द्रियों पर कंट्रोल आ जाता है। जो इच्छा, ममता के वश में हैं, कर्मेन्द्रियों के गुलाम हैं, उसे खुशी नहीं हो सकती। जिसे कोई इच्छा न हो वह बहुत खुश है, जो संगठन में रहते गुणग्राही है वह खुश है। ज़रा भी निंदा करने वाला कभी खुश नहीं रह सकता। तो पहले हैप्पीनेस चाहिए फिर हेल्दी-वेल्दी रहेंगे।

जिन बातों से खुशी गुम होती है, वहाँ से रास्ता बंद कर दो। जहाँ से खुशी आती है वह रास्ता खुला रखो। मेरी खुशी गुम क्यों होती है! चेक करना है- कोई गफलत है? बाबा ने जो इतना खज़ाना दिया है, वह कोई छीन न सके, इतना खबरदार, केयरफुल रहना है। संगमयुग की यह खुशी सतयुगी राज्य का अधिकारी बना रही है।

सेवा ब्राह्मण जीवन की शोभा है। ब्राह्मण सेवा न करें तो देवता बन न सकें। सेवा तन-मन-धन को पावन बनाती है। जो तन-मन-धन से सेवा में लगता है वह सहज पावन बन जाता है। जितना अभी तन से करो उतना तंदुरुस्त बनेंगे। फालतू सोचने से भी सिरदर्द होता है। सोचने से दर्द आ जाता है। हेल्दी बनना हो तो फालतू मत सोचो। वेल्दी बनना हो तो बाबा गरीब-निवाज़ है, पैसा नहीं है, दिल तो बड़ी है ना! अंदर से देने की दिल हो तो खुशी बढ़ेगी। खुशी सच्चाई से आती है। सेवा करो, सदा मीठा बोलो, औरों की दुआयें लेते चलो तो सदा खुश रहेंगे। रफ़ बोलने से खुशी गायब हो जाती है। जो खुशी से पुरुषार्थ करते हैं वह उड़ते रहते हैं, भारी नहीं होते। जो समझते हैं कि मैं बाबा की गोद में बैठा हूँ, बाबा के कंधों पर बैठा हूँ, बाबा के सिर पर बैठा हूँ... उन्हें बहुत खुशी रहती है। बाबा हमें अपना सिरमौर बनाता, डबल क्राउन देता है। जितना ऊंचा सोचो उतना ऊंचा बनेंगे। जितना फालतू सोचो उतना धारणा कम होती है। किसी को न देख बाबा ने जो खुशी का खज़ाना दिया है, जितना लूट सको लूटो और हेल्दी-वेल्दी बन जाओ।

उमंग-उत्साह के बिना जीवन नीरस

पहले सिर्फ ओम कहते थे,अभी ओम के साथ शान्ति बोलते हैं, तो शान्ति पहले फिर ओम निकलता है। साइंस के साधन सारे विश्व को अच्छी सेवा दे रहे हैं, यह तो काम हो रहा है। साइंस है प्रकृति का साधन, लेकिन वो भी तमोप्रधान बन चुकी है, हम अभी उसको साइलेन्स से सतोप्रधान बना रहे हैं। यह साइंस के साधन सौ साल पहले नहीं थे, अभी तो जलवा देख रहे हैं, प्लेन में उड़ रहे हैं। पहले प्लेन नहीं था। पुराने ज़माने में हम भी कराची से स्टीम्बर में आये, कोई ख्याल भी नहीं था कि प्लेन में भी कोई जा सकते हैं। अभी बाबा हमारी बुद्धि को प्लेन बना रहा है।

सहयोग देना, सहयोग लेना सहजयोग है। ऐसे नहीं लगे हम सहयोग दे रहे हैं, सहयोगी रहना अच्छा लगता है। और कहीं से सहयोग मिलता है तो दिल से थैंक्स निकलता है।

अन्दर में शान्ति है तो खुशी में चमक रहे हैं, ज़रा भी अशान्ति नहीं है। तो ऐसी शान्ति की शक्ति खुशमिजाज बना देती है। खुशी खुराक भी है, तो खज़ाना भी है। खुद को खुश रखने के लिए,औरों को खुश करने के लिए मनुष्यों को कितनी मेहनत करनी पड़ती है। सारी जीवन में मैं खुश रहूँ और भी खुश रहें इसमें बहुत मेहनत है। खुश रहना माना अन्तर्मुखी रहना। जो कभी खुश नहीं होते उसका कारण क्या है? बाह्यमुखता एकदम अच्छी नहीं लगती। बाह्यमुखता से कर्मेन्द्रियाँ चंचल हो जाती हैं। कर्मेन्द्रियाँ ऑर्डर में हैं तो शीतल हैं, शान्त हैं। तो अन्तर्मुखता से मन-बुद्धि को जीतने में खुशी है, विकर्माजीत बनने में खुशी है। कई कहते कभी-कभी, थोड़ा-थोड़ा बोला तो क्या हुआ? यह जो हमारी आदत है ज़्यादा सोचने की, बोलने की... जैसे यह करना है, यह करना है... इससे टेन्शन हो जाता है। तो फिर कोई भी पुरुषार्थ करने में मेहनत अनुभव होती है इसलिए सच्चाई से अन्दर चित्त को साफ रखने से खुशी होती है। तो कोई डिफेक्ट रह न जाये, उसके लिए गहराई से अपनी चेकिंग करके समय रहते चेंज कर लें, नहीं तो वो बाबा के दिल में नहीं बैठ सकेंगे। बाबा ने बहुत बड़ी दिल रखी है, कुछ भी चाहिए तो बाबा के दिल में चले जाओ। दिलाराम बाबा की दिल कैसी है? बाबा के सामने तो लाखों, करोड़ों बातें हैं दुनिया भर की, फिर भी देखो समा लेता है। बाबा जैसी दिल बनानी हो तो समाने की, समेटने की शक्ति से कोई भी बात की डिटेल में जाओ ही नहीं। समेटने और समाने की शक्ति से सदा सन्तुष्ट रहने का वरदान बाबा से ले लो। जब से बाबा की बनी हूँ, मुझे तो यह वरदान प्राप्त है। बाबा ने कहा सदा शब्द सदा याद रखो, यह बात साकार में भी कहता था। बड़े जो कहते हैं वो करो, तो हाथ से ऐसे आशीर्वाद मिलती है परन्तु जो अच्छा बन जाते हैं उनको दिल से दुआ मिलती है, मांगने से नहीं। वह दुआओं की ताकत चला रही है। ले लो दुआयें माँ-बाप की, तो सारे पापों की गठरी उतरे, फिर बाबा के प्यार की शक्ति से श्रेष्ठ कर्म करने का उमंग-उत्साह कभी कम नहीं होता है। बाबा की दुआयें भारीपन को खत्म कर देती है। बाबा मेरा कम्पैनियन है, यह फीलिंग सदा होती रहेगी तो खालीपन व अकेलापन फील नहीं करेंगे। कोई भी ऐसी घड़ी न आ जाये जो लगे कि मेरा कोई साथ नहीं दे रहा है, मेरे पास यह नहीं है, उनके पास है, यह थोड़ा भी संकल्प आया तो निश्चयबुद्धि से जो विजयंती बनने की लिंक चल रही थी वो टूट जाती है। प्लीज़, कभी भी कोई भी कारण से उमंग-उत्साह कम न हो।